डॉ.पद्मा पाटील
एम.ए.,एम.फिल.,पीएच.डी.
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

संस्तुति

मैं संस्तुति करती हूँ कि श्री.सचिन मधुकर कांबळे का "जयप्रकाश कर्दम के काव्य में चित्रित दलित जीवन" लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

स्थान : कोल्हापुर

तिथि : 12103109

12/03/09
(डॉ.पद्मा पाटील)
अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४.

डॉ. सुनील बनसोडे
एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी.
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
जयसिंगपुर कॉलेज, जयसिंगपुर
एवं
सदस्य, हिंदी अध्ययन मंडल,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री.सचिन मधुकर कांबळे ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल्. (हिंदी) उपाधि के लिए "जयप्रकाश कर्दम के काव्य में चित्रित दलित जीवन" लघु शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ लिखा है। यह उनकी मौलिक रचना है। पूर्व योजना के अनुसार संपन्न इस शोध कार्य में शोध-छात्र ने मेरे सुझावों का पूर्णत: पालन किया है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है। प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट होकर ही इसे परीक्षणार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान करता हूँ।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 12/03/09

शोध-निर्देशक

(डॉ. सुनील बनसोडे)

प्रख्यापन

मैं प्रख्यापित करता हूँ कि "जयप्रकाश कर्दम के काव्य में चित्रित दलित जीवन" लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 12/03/09

शोध-छात्र

(श्री. सचिन मधुकर कांबळे)

प्राक्कथन

प्राक्कथन

प्रेरणा एवं विषय चयन :

हिंदी दलित साहित्य में सर्वश्रेष्ठ योगदान देनेवाले साहित्यकारों में जयप्रकाश कर्दम एक है। उनका साहित्य कल्पना पर आधारित नहीं है बल्कि जो जीवन में घटित यथार्थ का वास्तव विश्लेषण करने के लिए उन्मुख होता है। दलितों के दु:ख, दर्द, पीड़ा, संवेदनाओं को पकड़ने का सही प्रयास उनके साहित्य ने किया है। उन्होंने इस वर्ग की संवेदनाओं का चित्रण करीब करीब सभी विधाओं में अभिव्यक्त करने का प्रयास किया। उन्होंने अपने साहित्यद्वारा न सिर्फ दलितों की संवेदनाओं को पकड़ने प्रयास किया बल्कि शोषकों के प्रति कड़ा विद्रोह करने के लिए उनकी लेखनी तलवार की तरह आगे बढ़ती रही है।

इस प्रकार वे समाज में दलितों के प्रति संवेदना जताकर चूप नहीं बैठते बल्कि उनके प्रति समाज को सही तरीके से व्यवहार करने के लिए प्रेरित करते है। साथ ही समाज में उनके स्वत्व का रक्षण करने के लिए प्रोत्साहन देकर समाज में हर हक, हर चीजों का उपभोग करने दलितों को मिले, यह आशा मन में रखकर उनका साहित्य दलित की राह में प्रकाश या आशा की नयी किरण फैलाना चाहता है।

जयप्रकाश कर्दम की ज्यादातर रचनाएँ दलित वर्ग को केंद्र में रखकर लिखी गयी है। जिसमें उन्होंने दलित जीवन के विभिन्न परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण करने का प्रयास किया। इस संदर्भ में मैंने डॉ. सुनील बनसोडे जी से बातचीत की, उन्होंने मेरी इन्ही विचारों को जानकर इस दृष्टि से मुझे प्रोत्साहित किया। समय-समय पर मार्ग दर्शक की सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। जिसके परिणाम स्वरूप 'जयप्रकाश कर्दम के काव्य में चित्रित दलित जीवन' इस विषय पर शोध कार्य करने की प्रेरणा मुझे मिली और मैंने प्रस्तुत विषय पर शोध कार्य करने का दृढ संकल्प कर लिया।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY

श्रद्धेय गुरूवर्य डॉ. सुनील बनसोडे जी से विचार विमर्श के पश्चात् लघु शोध प्रबंध के लिए 'जयप्रकाश कर्दम के काव्य में चित्रित दलित जीवन' इस विषय का चयन किया। जयप्रकाश कर्दम के काव्य पर अनुसंधान करने से पहले मेरे मन में उनके संदर्भ में निम्नांकित सवाल उपस्थित हुए -

1. जयप्रकाश कर्दम का व्यक्तित्व एवं कृतित्व कैसा होगा ?
2. जयप्रकाश कर्दम ने प्राय: दलितों को ही अपने काव्य का विषय क्यों बनाया ?
3. दलित काव्य के पीछे कर्दम जी की क्या मानसिकता रही होगी ?
4. जयप्रकाश कर्दम जी के काव्य में दलित जीवन का यथार्थ चित्रण मिलता है या नहीं ?
5. दलितों की किन-किन समस्याओं को उन्होंने उजागर करने का प्रयास किया है ?
6. दलितों की सही व्यथा अभिव्यक्त करने में जयप्रकाश कर्दम कितने मायने में सफल हुए है ?
7. जयप्रकाश कर्दम का साहित्य क्या सिर्फ दलितों के प्रति संवेदना जताता है? या शोषकों के प्रति भी विद्रोह करता है?
8. जयप्रकाश का साहित्य समाज से क्या अपेक्षा रखता है ?

विवेच्य काव्य संग्रहों के अध्ययन के उपरांत उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हुए उन्हें उपसंहार में प्रस्तुत किया है। अध्ययन की सुविधा हेतु मैंने अपने लघु-शोध प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजित कर प्रस्तुत शोध-विषय का विवेचन - विश्लेषण किया है।

प्रथम अध्याय - "जयप्रकाश कर्दम : व्यक्तित्व एवं कृतित्व" के अंतर्गत कर्दम जी का सामान्य परिचय दिया है। इसमें उनका जन्म, माता-पिता, बचपन, व्यवसाय, शिक्षा, छात्रजीवन, गुरू, नौकरी, विवाह, संतान , अभिरूचि, रहन-सहन आदि

बातों का विवेचन किया है। साथही उनके अंतरंग व्यक्तित्व की विशेषताओं को स्पष्ट किया है। कृतित्व में कर्दम जी के साहित्य संसार के बारे में संक्षिप्त में जानकारी दी है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्षों को प्रस्तुत किया है।

द्वितीय अध्याय - "हिंदी कविता में दलित जीवन की संकल्पना" के अंतर्गत 'दलित' शब्द का अर्थ एवं परिभाषा देते हुए, 'दलित' शब्द का व्यापक और संकुचित अर्थ स्पष्ट किया है। दलितों की वर्तमान स्थिति स्पष्ट करते हुए दलितों के जीवन के विविध पहलुओं पर डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जी के विचार स्पष्ट किये है। हिंदी में दलित कविता का आरम्भ को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। तथा भारतीय संविधान और आज के दलित जीवन को स्पष्ट किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्षों को प्रस्तुत किया है।

तृतीय अध्याय - "जयप्रकाश कर्दम के काव्य में चित्रित दलित जीवन" इसके अंतर्गत भारतीय समाज जीवन में दलित का स्थान, आजादी के पश्चात् बदला हुआ समाज जीवन को स्पष्ट करते हुए आलोच्य कविता संग्रहों में दलित जीवन को स्पष्ट किया है। दलितों की आज भी सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थिति को स्पष्ट करते हुए दलित जीवन का चित्रण किया है।

चतुर्थ अध्याय - "जयप्रकाश कर्दम के काव्य में चित्रित दलित जीवन की समस्याएँ" इसके अंतर्गत दलितों में व्याप्त समस्याओं को उजागर किया है। इसमें जातियता की समस्या, अशिक्षा, अंधविश्वास, आर्थिक, भूख की समस्या, बाढ़ की समस्या तथा परंपरागत व्यवसाय करने की समस्याओं पर प्रकाश डाला है। अंत में प्राप्त निष्कर्षों को अंकित किया है।

उपसंहार में इस विषय के अध्ययन से प्राप्त समन्वित निष्कर्षों को प्रस्तुत किया है। दलित जीवन में होनेवाला परिवर्तन, एवं चेतना आदि का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है। अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची दी है।

लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता :

1. "जयप्रकाश कर्दम के काव्य में चित्रित दलित जीवन" यह लघु शोध प्रबंध स्वतंत्र रूप से प्रथमत: ही संपन्न हुआ है।
2. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में काव्य में चित्रित दलित जीवन के विविध पहलुओं की तलाश की है।
3. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में कर्दम जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है।
4. प्रस्तुत लघु शोध- प्रबंध में कर्दम जी के काव्य में चित्रित दलित, निम्न वर्ग, मजदूर, तथा नारी जीवन का अध्ययन करते हुए दलित जीवन बारीकी से व्याख्यायित करने का सफल प्रयास किया है।

ग्रहणनिर्देश

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करनेवाले तथा मुझे समय-समय पर मार्गदर्शन और प्रोत्साहन देनेवाले गुरूजनों, हितचिंतकों एवं आत्मीयजनों के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

यह लघु शोध-प्रबंध आदरणीय गुरूवर्य डॉ. सुनील बनसोडे जी के प्रतिभा संपन्न, आत्मीय प्रेरक एवं कुशल निर्देशन का ही फल है। अपने अनेक व्यस्तताओं के बावजूद भी उन्होंने मुझे मौलिक और सही दिशा में मार्गदर्शन किया है। आपके प्रति शब्दों में आभार व्यक्त करना असंभव है। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी आपका स्नेह तथा मार्गदर्शन मिलता रहेगा।

शिवाजी विश्वविद्यालय हिंदी विभाग की अध्यक्षा आदरणीय प्रा.डॉ.पद्मा पाटील, आदरणीय प्रा.डॉ.अर्जुन चव्हाण, आदरणीय डॉ.शोभा निंबाळकर आदि सभी का सहयोग तथा समय-समय पर उनके द्वारा किये हुए निर्देश से मेरे शोध कार्य का मार्ग प्रशस्त हुआ।

इस लघु शोध-प्रबंध की परिपूर्ति के लिए मेरे आदरणीय पूज्य पिताजी श्री. मधुकर कांबळे और माताजी सौ. भारती कांबळे जी के शुभ आशीष का ही फल हैं कि मैं अपने कार्य पूर्ति में सफल हुआ हूँ। मेरे मामा प्रा. अजय कांबळे जिसमें प्रेरणा और प्रोत्साहन मुझे मिला है। साथ ही मेरी बड़ी बहन वैशाली तथा जीजाजी अनिल जी और छोटे भाई संदीप के प्रति मैं सहृदयता से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

मेरे मित्र और कई हितचिंतकों की शुभकामनाएँ मेरी साथ रही हैं। प्रा. गोरख बनसोडे जिन्होंने मुझे प्रेरणा एवं प्रोत्साहन मिला है। इनके प्रति मैं हृदय से आभारी हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय के पदाधिकारी, तथा कर्मचारी को मैं धन्यवाद देता हूँ। जयसिंगपुर कॉलेज, जयसिंगपुर के ग्रंथपाल एवं अन्य कर्मचारीओं के प्रति मैं विशेष ऋणी हूँ, जिन्होंने पुस्तके जुटाने में अत्यंत तत्परता के साथ मेरी सहायता की।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के संगणक टंकण को सुचारू रूप से पूर्ण करने वाले मेरे मित्र 'अविनाश कांबळे' तथा 'अरूण कांबळे' का मैं आभारी हूँ। जिनकी तत्परता से लघु शोध -प्रबंध समय पर प्रस्तुत करने में बेहद सहयोग मिला हैं।

अंत में इस शोध कार्य को संपन्न करने के लिए परोक्ष एवं प्रत्यक्ष रूप से जिन्होंने सहायता की है, मैं उन सभी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ और इस लघु शोध प्रबंध को विद्वतजनों के सम्मुख विनम्रतापूर्वक परीक्षण हेतु प्रस्तुत करता हूँ।

स्थान - कोल्हापुर

तिथि - 12/03/09

शोध-छात्र

श्री.सचिन मधुकर कांबळे